प्रोफेसर जी० सुंदर रेड्डी

{जीवन परिचय एवं साहित्यिक परिचय}

संक्षिप्त-परिचय

- **जन्म**- **1919** ई०।
- **जन्म-स्थान**- आंध्र प्रदेश।
- **कार्य**- आंध्र वि०वि० में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष रहे ।
- **प्रारम्भिक शिक्षा**- संस्कृत एवं तेलुगु से।
- **लेखन विधा** : हिन्दी और तेलुगु भाषा साहित्य।
- **शैली**- विवेचनात्मक, गवेषणात्मक, आलोचनात्मक ।
- **प्रमुख रचनाएँ**- साहित्य और समाज, मेरे विचार, दक्षिण की भाषाएँ और उनका साहित्य आदि ।
- **मृत्यु**- सन् **2005** ई०।

जीवन परिचय-

प्रो० जी० सुंदर रेड्डी जी का जन्म **1919** ई० में आंध्र प्रदेश के बेल्लूर जनपद के बत्तुलिपल्लि नामक ग्राम में हुआ था। प्रो० जी० सुंदर रेड्डी आंध्र प्रदेश विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के अध्यक्ष रहे। प्रारंभिक शिक्षा संस्कृत एवं तेलुगु भाषा में हुई। रेड्डी जी आंध्र प्रदेश विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर अध्ययन एवं अनुसंधान विभाग के अध्यक्ष भी रहे । इन के निर्देशन में हिंदी और तेलुगु :एक तुलनात्मक अध्ययन ग्रंथ पर शोध कार्य भी हुआ । इनका निधन सन **2005** ई० में हो गया।

साहित्यिक परिचय

अहिन्दी प्रदेश के निवासी होते हुए भी प्रो० जी० सुंदर रेड्डी ने हिन्दी भाषा पर अच्छा अधिकार प्राप्त किया है। राष्ट्रवादी हिन्दी प्रचारक, प्रख्यात साहित्यकार एवं तुलनात्मक साहित्य के मूर्धन्य समीक्षक, श्रेष्ठ विचारक, समालोचक एवं निबन्धकार प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी दक्षिण भारतीयों के लिए हिन्दी और उत्तर भारतीयों के लिए दक्षिणी भाषाओं के अध्ययन की प्रेरणा दी है। इन्होंने हिन्दी भाषियों के लिए तमिल, तेलुगू, कन्नड़ और मलयालम साहित्य की रचना की है। वे आजीवन भाषायी एकता के लिए प्रयासरत रहे। इनके अनेक निबन्ध हिन्दी, अँग्रेजी एवं तेलुगू पत्र- पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। हिंदी भाषी न होते हुए भी रेड्डी जी ने हिंदी को अपनी रचनाओं के रूप में जो अमूल्य निधि सौंपी है। उसके लिए हिंदी साहित्य सदैव ऋणी रहेगा।

Gyansindhu classes

कृतियाँ

प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी के प्रकाशित ग्रन्थ निम्नलिखित हैं-

- साहित्य और समाज
- मेरे विचार
- हिन्दी और तेलुगू : एक तुलनात्मक अध्ययन
- दक्षिण की भाषाएँ और उनका साहित्य
- वैचारिकी : शोध और बोध
- वेलुगू दारुल (तेलुगू)
- लैंग्वेज प्रॉब्लम इन इण्डिया (सम्पादित अँग्रेजी ग्रन्थ)

भाषा-शैली-

प्रो० रेड्डी की शैली के रूप है-

विचारात्मक शैली, गवेषणात्मक शैली, प्रश्नात्मक शैली एवं समीक्षात्मक शैली इनके निबंधो में विद्यमान हैं ।

Gyansindhu classes